प्रथम अध्याय

पत्रकारिता का एक झलक

अध्याय - 1

पत्रकारिता की एक झलक

पत्रकारिता का सामान्य परिचय

"पत्रकारिता का ध्येय समाज सेवा है।"

- महात्मा गाँधी

{आधुनिक पत्रकारिता की रूपरेखा; इन्द्र चन्द रजवार; पृ॰ 25}

मानव ज्यों - ज्यों विविधता और व्यस्त्ता की ओर अग्रसर होता जा रहा है त्यों - त्यों वह ऐसे साधनों की खोज में संलग्न होता जा रहा है जो हमारे जीवन और आकांक्षाओं की पूर्ति में सहायक हो सके। पत्रकारिता हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। निश्चय ही पत्रकारिता एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो हमारे जीवन की विविधताओं और दैनिक घटनावलियों को प्रस्तुत करने में अपना सानी नहीं रखता।

21 वीं सदी का जीवन जितना घटना बाहूल और वैचित्र्य-विरोधमूलक है, उसे सही रूप में प्रस्तुत करने के लिए पत्रकारिता एक अमोध अस्त्र भी है और जीवन माध्यम भी। वर्तमान जीवन की अनिवार्यताएँ, अपरिहार्यताएँ जिस रूप में आज प्रस्तुत हो रही हैं उन्हें पत्रकारिता ही प्रस्तुत करती है। अतः पत्रकारिता ही वह माध्यम हैं जिसके द्वारा हम विश्व से जुड़े रहते हैं। इतने

उपयोगी माध्यम के महत्व के लिए उसके अन्य विषयों की जानकारी जानना आवश्यक है।

1. पत्रकारिता : अर्थ एवं परिभाषा

"पत्रकारिता प्रकाशन / संपादन / लेखन एवं प्रसारण युक्त समाचार माध्यम का व्यवसाय है।"

- न्यू वेब्सटर्स डिक्शनरी

{आधुनिक पत्रकारिता की रूपरेखा; इन्द्र चन्द रजवार; पृ॰ 25}

पत्रकारिता अँग्रजी के **जर्नलिज्म [Journalism]** शब्द का हिन्दी रूपातंरण है जो कि **जर्नल [Journal]** से बना है। **जर्नल** शब्द की उत्पत्ति **लैटिन भाषा के ड्यूरनलिस [Diurnalis]** शब्द से माना जाता है। **जर्नल** का अर्थ है, "**एक निश्चित समय पर प्रकाशित होने वाला सूचना पत्र है।**" इसी तरह **जर्नल** शब्द के अलग - अलग अर्थ हैं।

20वीं शताब्दी के आरंभ में **जर्नल** शब्द को विवेचनापूर्ण एवं गंभीर विषयों के प्रकाशन के लिए उपयोग होने लगा। पत्रकारिता और जर्नलिज्म की भी इस आधार पर व्याख्या की गई है। जर्नलिज्म शब्द का अर्थ उसकी व्यावहारिकता पर ही आधारिता है। भारतीय संदर्भ में पत्रकारिता के शब्दिक अर्थ को विशेष महत्व नहीं मिला है। कई विद्वानों ने इसे अपने - अपने तरीके से

स्पष्ट करने का प्रयास किया है। वस्तुतः पत्रकारिता का अर्थ लेखन, संपादन एवं प्रकाशन के उस व्यवसाय से है जो विभिन्न समाचार माध्यमों से सूचनाओं एवं विचारों का आदान - प्रदान करता है।

आरंभ में समाचार पत्र और पत्रिकाएँ ही समाचार माध्यम थीं लेकिन आज टेलीविजन सर्वाधिक प्रभावी और लोकप्रिय माध्यम है। अतः पत्रकारिता जीवन की विविधात्मक, तथ्यात्मक और यथार्थ परिस्थितियों को चारों कोनों (पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण) से एकत्र करके पत्रकार द्वारा जनमानस तक प्रेषित करने का सशक्त माध्यम है।

"पत्रकारिता समसामयिक घटनाओं की सुदृढ़ परिमार्जित एवं व्यवस्थित भाषा में विचाराभिव्यक्ति है।"

- प. महावीर प्रसाद द्विवेदी

{आधुनिक पत्रकारिता की रूपरेखा; इन्द्र चन्द रजवार; पृ॰ 25}

कुछ विद्वानों ने पत्रकारिता को इस प्रकार परिभाषित किया है :-

❖ **"पत्रकारिता दैनिक जीवन की घटनाओं और उनके आधार पर प्रकाशित समाचारों की संवाहिनी होती है। इसमें घटनाओं, तथ्यों, व्यावस्थापरकता के साथ - साथ राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और कलात्मक संदर्भों की प्रस्तुति होती है।"**

- अमेरिकन एनसाइक्लोपीडिया

{पत्रकारिता सिद्धांत और प्रयोग; डॉ लक्ष्मीकांत पाण्डेय; पृ॰ 3}

❖ "पत्रकारिता विज्ञान कला और शिल्प की त्रिवेणी है जिसका स्नातक समाज सेवा तथा जन मानस के उन्नयन में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहण करता है।"

– डॉ अर्जुन तिवारी

{हिन्दी पत्रकारिता गद्य विधाएँ; पं बनारसीदास चतुर्वेदी, डॉ सुरेन्द्र जोशी; पृ°159}

❖ "पत्रकारिता एक रचनाशील विधा है। इसके बगैर समाज को बदलना असंभव है। अतः पत्रकारों को अपने दायित्व और कर्त्तव्यों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करना चाहिए क्योंकि उन्हीं के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जायेगा।"

– महादेवी वर्मा

{मीडिया और प्रसारण; डॉ रमेश मेहरा; पृ°12}

❖ "पत्रकारिता सामयिक ज्ञान का व्यवसाय है।"

– श्री जी. मूलर

{प्रयोजनमूलक हिन्दी–प्रासंगिकता एवं परिदृश्य; डॉ सु. नागलक्ष्मी; पृ° 264}

❖ "परंपरागत तौर पर पत्रकारिता समाचारों के संकलन, संपादन और समाचार पत्र के रूप में उसके प्रकाशन को कहा जाता है। रेडियो, टेलीविजन एवं अन्य संचार माध्यमों के विकास और उनकी लोकप्रियता से पत्रकारिता का दायरा काफी बढ़ गया है।"

– लेक्सीकॉन यूनिवर्सल इन्साइक्लोपीडिया

{आधुनिक पत्रकारिता की रूपरेखा; इन्द्र चन्द रजवार; पृ° 25}

❖ "पत्रकारिता रण भूमि से भी अधिक बड़ी चीज है, यह कोई पेशा नहीं; बल्कि पेशे से कोई ऊँची चीज है। यह एक जीवन है। "

- जेम्स मैकडोनल्ड

{मीडिया और प्रसारण; डॉ रमेश मेहरा; पृ°12}

❖ "पत्रकारिता पत्र-पत्रिकाओं के लिए समाचार, लेख आदि एकत्रित तथा सम्पादित करने, प्रकाशन, आदेश आदि देने का कार्य है।"

- डॉ बद्रीनाथ कपूर

{प्रयोजनमूलक हिन्दी-प्रासंगिकता एवं परिदृश्य; डॉ सु. नागलक्ष्मी; पृ° 264}

❖ "विज्ञापन वह व्यावसायिक शक्ति है जिसके अन्तर्गत मुद्रित शब्दों द्वारा विक्रय वृद्धि में सहायता मिलती है, ख्याति का निर्माण होता है एवं साख बढ़ती है।"

- शेल्डन

(जनसंपर्क विज्ञापन एवं प्रसार माध्यम; एन.सी. पंत; पृ° 105)

❖ "विज्ञापन मुद्रित, लिखित, उच्चरित अथवा चित्रित विक्रय कला है।"

- फ्रैंक ब्रेश्बी

(मीडिया और प्रसारण; डॉ रमेश मेहरा; पृ° 265)

English Definitions : [अँग्रजी - परिभाषाएँ]

❖ **"Journalism, a word which came in English from Latin DUNRNALIS, through French Journal, with the original meaning of daily; later and current meaning is derived the idea of daily entries. Diurnal and Journal both used for periodical in the 17th century. In the 20th century journal is more frequently applied to receive and learned Publication."**

- Encyclopaedia Britanica

{आधुनिक पत्रकारिता की रूपरेखा; इन्द्र चन्द रजवार; पृ॰ 25}

❖ **(i)"The occupation of Profession of a Journalist Journalistic writing. (ii) the public journals collectively (iii) the Practice of keeping a journal."**

- Oxford English Dictionary

{मीडिया और प्रसारण; डॉ रमेश मेहरा; पृ॰12}

❖ **"The style of writing characteristics of material in newspaper and magazines, consisting of direct presentation of facts or occurence with little attempts at analysis or interpretation."**

- American Heritage Dictionary

{WWW.thefreedictionary.com}

❖ **"Journalism, the collection and periodic publication or transmission of news through media such as newspaper, periodical, television and radio."**

- Encyclopaedia Britanica
{WWW.answers.com}

❖ **"The Profession or activity of collecting and Editing material of current interest for presentation through news media."**

- The New Penguin English Dictionary
{The New Penguin English Dictionary; Robert Allin; P.No758}

1.1 पत्रकारिता का स्वरूप

पत्रकारिता अपने विचारों को जनता तक पहुँचाने का एक उपक्रम या साधन है। पत्रकारिता आज एक ऐसी सशक्त शक्ति भी बन गई है, जो समाज की कमियों, गलतियों एवं कुरीतियों को उजागर करके उन्हें दूर करने का प्रयास करती है और दूसरी ओर लोक जागृति करके सुधारपूर्ण कार्यों को प्रोत्साहित करती है। पत्रकारिता जनभावना की अभिव्यक्ति, सद्भावों की उद्भति और नैतिकता की पीठिका है।

"ज्ञान और विज्ञान, दर्शन और साहित्य कला और कारीगरी, राजनीति और अर्थनीति, समाज और इतिहास, संघर्ष और क्रांति, उत्थान और पतन, निर्माण और विनाश, प्रगति और दुर्गति के छोटे - बडे प्रवाहों के प्रतिबिम्ब करने में पत्रकारिता के समान दूसरा कौन सफल है?"

- पं कमलापति त्रिपाठी

{हिन्दी पत्रकारिता गद्य विधाएँ; पं. बनारसीदास चतुर्वेदी, डॉ सुरेन्द्र जोशी; पृ°157}

पत्रकारिता का आज जो स्वरूप है वह प्रारंभिक काल की पत्रकारिता से नितांत भिन्न है। आज समाचार पत्रों के केवल समाचारों का ही संकलन नहीं होता है। समाचार पत्रों में विज्ञापन, विचार, विवेचन, विश्लेषण तथा रचनात्मक कृतियों की जानकारी प्राप्त होती है।

मनुष्य् जीवन के सभी आयामों तक इसकी पहुँच है जो आम जनता को सहजता से सुलभ रूप में मिलता है समाचार पत्रों में देश-विदेश के सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक गति-विधियों का उद्धेश्यपूर्ण लेखा जोखा है। पत्रकारिता की परिभाषाओं से जन-चेतना की मुखरता में उसके दायित्व का बोध हो जाता है।

" पत्रकारिता - ऐसा माध्यम है, जिससे हम अपने मस्तिष्क में संसार की ऐसी सारी सूचनाएँ संकलित कर लेते हैं, जिन्हें कभी भी स्वतः नहीं जान सकते।"

- हर्बर्ट बूकर

{प्रयोजनमूलक हिन्दी; डॉ लक्ष्मीकांत पाण्डेय, डॉ प्रमिला अवस्थी; पृ° 116}

समाज की ऊर्ध्वमुखी या अधोमुखी स्थिति, समाज के उत्थान, पतन, सृजन एवं विनाश की स्थितियों को यथावत् पत्रकारिता ही हम तक पहुँचाती है। यह जानना भी स्वाभाविक हो जाता है कि उपयुक्त सिद्धांतों की पूर्ति पत्रकारिता द्वारा वह अपने लक्ष्य तक पहुँचे। इस दिशा में पत्रकारिता के कुछ शाश्वत धर्म ही उसके स्वरूप को उद्घाटित कर सकते हैं।जिन्हें इस क्रम में रखा जा सकता है :-

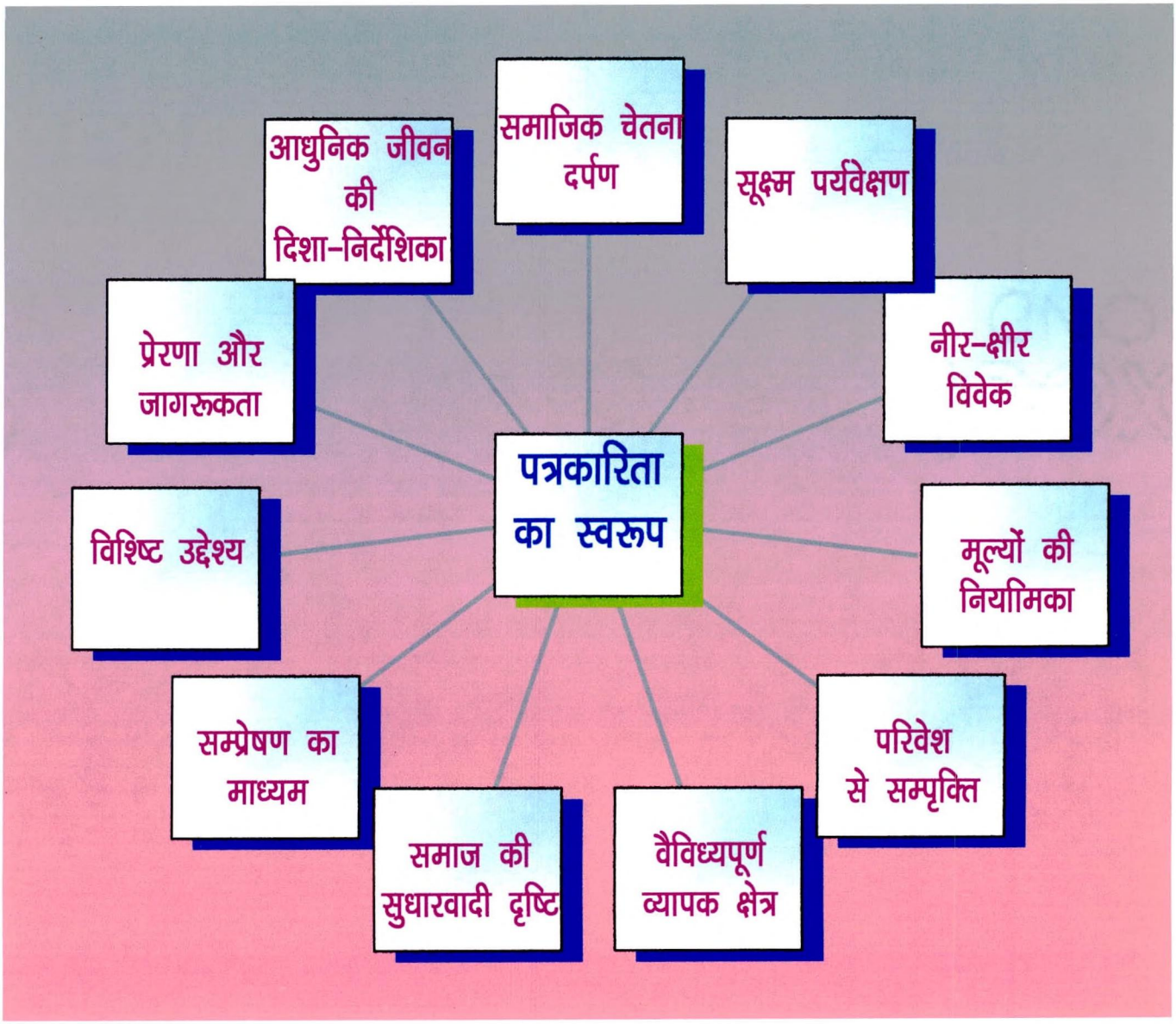

2. पत्रकारिता का महत्व एवं उद्देश्य

2.1. पत्रकारिता का महत्व

"दुनिया में कोई भी बदलाव तब तक संभव नहीं है जब तक जनता अपने आर्थिक, राजनैतिक अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं हो जाती। जनता को उसके अधिकारों के प्रति जागरूक करने और बेहतर जीवन की इच्छा का संचार करने का सबसे बड़ा माध्यम पत्रकारिता है।"

- ब्ला. ई. लेनिन

{आधुनिक पत्रकारिता की रूपरेखा; इन्द्र चन्द रजवार; पृ॰ 28}

पत्रकारिता का महत्व असंदिग्ध है। पत्रकारिता विविध जनसमस्याओं को प्रशासन के सम्मुख प्रस्तुत कर उन पर रचनात्मक बहस को भी प्रोत्साहित करती है। पत्रकारिता जनता के विचारों का दर्पण है, जिस प्रकार विशाल बांध को, पानी के दबाव से टूटने से बचाने के लिए पानी के निकास के लिए छोटे-छोटे द्वार बनाये जाते हैं, ठीक उसी प्रकार की भूमिका समाज में विभिन्न विचारों को प्रतिबिम्बित करने वाले पत्रकारिता को निभाते हैं।

पत्रकार जब अपने विचारों को प्रकट करते हैं तो जनता उसी के माध्यम से उनके विचारों को सुनते हैं, परखते हैं और उसके बाद अपना निर्णय देते हैं। पत्रकारिता समाज के सामने एक समस्या के कई विकल्प प्रस्तुत करती है।

इससे समाज को निर्णय करने और अपना रास्ता चुनने में आसानी होती है। जैसे - बेरोजगार व्यक्ति समाचार-पत्रों में अपने रोजगार ढूँढते हैं। आज चलचित्रों का जो इतना महत्व है उसकी महत्ता का श्रेय भी पत्रकारिता को ही है। पत्रकारिता के द्वारा हम दुनिया के किसी भी कोने में क्यों न हो तुरन्त देश-विदेश की खबरों से परिचित हो जाते हैं।

हम उन व्यक्तियों के प्रति नतमस्तक हैं जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अपने समाचारों को देकर पत्रों के द्वारा सराहनीय योगदान दिया। यह एक ऐसी सेवा है जिसके द्वारा एक साधारण मानव भी यशस्वी हो सकता है। वास्तव में पत्रकारिता किसी भी समाज का अभिन्न अंग है। पत्रिकाओं के द्वारा ही हम आधुनिक समाज की जानकारी प्राप्त करते हैं और अपने लिए भविष्य का मार्ग चुनते हैं।

पत्रकारिता जन-सूचना तो देती ही है साथ में जन-शिक्षण तथा जन-जागृति, लोकरंजना, लोक कल्याण व राष्ट्र प्रेम को प्रभावित करती है। अतः कहा जा सकता है कि पत्रकारिता का अपना महत्व है और यह महत्त्व किसी एक कारण से नहीं है अनेक कारणों से है। सामाजिक मानव के ज्ञानवर्द्धन, रुचि परिष्करण, वस्तु-स्थिति के चित्रण, जनमत निर्माण में पत्रकारिता का विशेष महत्त्व है। अतः पत्रकारिता सामाजिक जीवन की प्राणवायु के सदृश्य है।

2.2 पत्रकारिता का उद्देश्य

"पत्रकारिता का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं और विचारों को समझना तथा उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना, तथा तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भीकतापूर्वक प्रकट करना है।"

- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

{ हिन्दी पत्रकारिता का विकास; एन.सी.पंत; पृ॰ 267}

पत्रकारिता का प्रमुख उद्देश्य सम्पूर्ण समाज में नव-संचार, सजीवता, जागरण, नवस्फूर्ति, सक्रियता और गतिमयता के संदेश का प्रचार और प्रसार करना है। पत्रकारिता का उद्देश्य सामाजिक क्रान्ति की दशा में चेतना उत्पन्न करना है। समाज में व्याप्त अंधविश्वास के विरुद्ध, जाति-पाँति, छुआछूत, बाल-विवाह, अनमेल विवाह आदि के विरोद्ध में पत्रकारिता जनमानस को जागृत करने में अहम् भूमिका निभा सकते हैं।

पत्रकारिता के माध्यम से जनसाधारण की सेवा करना, उसे नवीनतम सूचना उपलब्ध कराना, घटनाओं की छानबीन करना, सूचनाओं की जनहित में व्याख्या करना तथा जनता के ज्ञान में वृद्धि करना ही उसका उद्देश्य है। पत्रकारिता का उद्देश्य केवल सूचना पहुँचाकर समाप्त नहीं होता बल्कि वह समाज में मानवीय मूल्यों की नींव और संस्कार डालती है।

यद्यपि पत्रकारिता का केन्द्र समाज है जहाँ से वह खबरें ग्रहण करती है लेकिन उन खबरों को समाप्त कर उनमें नवीन सुन्दरता को प्रकट करना पत्रकारिता का परम उद्देश्य है। पत्रकारिता का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना की भावना उद्दीप्त करना व स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना था। उस समय पत्रकारिता ही एक मात्र ऐसा माध्यम था जिसके द्वारा समाज में पनप रही कुरीतियों के प्रति जनता का ध्यान आकर्षित किया जा सकता था और उनमें देश भक्ति की भावना पैदा की जा सकती थी।

3. पत्रकारिता के कर्त्तव्य और दायित्व

"Advertising devoted primarily to selling the corporate personality with its first objective going beyond the direct sale of a single product or service."

- राष्ट्रीय विज्ञापनदाता एवं प्रकाशन सूचना संघ

(विज्ञापन की दुनिया; कुमुद शर्मा; पृ॰ 14)

जीवन की प्रत्येक छोटी-बड़ी समस्या का समाधान आदमी आज पत्रकारिता में खोजने लगता है। समाज को विशेष दिशा, उसे सशक्त करना, उसमें प्रभाव और ओज पैदा करने का काम पत्रकारिता को समाज का पथ-प्रदर्शन और राष्ट्रीय हितों का सजग प्रहरी बना देता है। आज पत्रकारिता ही समस्त विश्व का दर्पण बनकर हमारे समक्ष सही तस्वीर प्रस्तुत करने लगी

है। पत्रकारिता ने मानवता के ज्ञान और चेतना में वृद्धि की है, मूक विचारों को वाणी दी है, और स्वप्नों में रंग भरे है। यह एक साधारण व्यक्ति के सामर्थ्य से बाहर की चीज है कि वह विज्ञान की खोजों और दार्शनिकों के ऊँचे किचारों को आसानी से समझ सके, पर पत्रकारिता ने उसे भी संभव बना दिया है। पत्रकारिता का ऐतिहासिक अध्ययन करने पर पता चलता है कि पत्र-पत्रिकाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में सही रूप से जनता जनार्दन का पथ-प्रदर्शन किया है। पत्रकारिता वर्तमान जीवन के बहुआयामी विस्तार और विकास से सुपरिचित होने के लिए पत्रकारिता अपरिहार्य है।

पत्रकारिता ही वह विधा और वह कला है जिसने दुनिया के विभिन्न जाति समूहों को एकसूत्र में पिरोया है। आधुनिक पत्रकारिता अभिव्यक्ति और संवाद संप्रेषण का माध्यम होने के साथ-साथ ज्ञान विज्ञान, मनोरंजन एवं औद्योगिक-व्यावसायिक प्रचार-प्रसार का साधन बन गया है। प्रत्येक युग की पत्रकारिता समाज के समक्ष सच्चाई को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है, करता रहा है तथा करता रहेगा।

पत्रकारिता समाज को प्रभावित करने के लिए किसी प्रकार से मायावी की भाँति अभिनय नहीं करता अपितु पत्रकार जो तथ्य सच्चाई से परिपूर्ण अपनी लेखनी से निकालता है उसे पाकर जनता-जर्नादन स्वतः प्रभावित हो जाती है। पत्रकारिता जनता का सेवक है।

3.1 पत्रकारिता के दायित्व

भारत में पत्रकारिता को समाज के प्रति महान दायित्व का निर्वाह करना पड़ता है। समाज के विस्तृत परिक्षेत्र को देखने पर यह जान पड़ता है कि उसका प्रत्येक क्षेत्र पत्रकारिता के अन्तर्गत आ सकता है। वर्तमान युग में पत्रकारिता अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। पत्रकारिता का विकास और परिवर्तन के बदलाव उसका आरंभ बौद्धिक एवं चिंतन के स्तर पर होता है। पत्रकारिता इसी लक्ष्य की पूर्ति करती है। इस प्रकार पत्रकारिता के निम्न दायित्व हो सकते है :

- ❖ समाज को उचित दिशा निर्देश देना।
- ❖ गरीबी उन्मूलन अभियान।
- ❖ नवीन आर्थिक योजनाओं का परिचय देना।
- ❖ सामाजिक कुरीतियों को विश्लेषित करना।
- ❖ धार्मिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर विचार।
- ❖ राजनैतिक अधिकारों के विषय में सामान्य जनता को सचेत करना।
- ❖ सरकारी नीतियों का प्रचार-प्रसार।
- ❖ नई-नई शिक्षा नीतियों और उपलब्धियों को जनता के बीच ले जाना।
- ❖ महिला-जगत से संबंधित समस्याओं का गुण-दोष परक विवेचन।
- ❖ बाल कल्याण कार्यक्रम का परिचय।

- ❖ परिवार नियोजन की महत्ता का विज्ञापन करना।
- ❖ विज्ञान की नवीनतम उपलब्धियों को जनता तक पहुँचाना।
- ❖ दलितोत्थान समस्या का विश्लेषण।
- ❖ देश की अखंडता की रक्षा और राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाना।

आज की पत्रकारिता का दायित्व क्षेत्र दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। इसलिए, उपर्युक्त दायित्वों के अतिरिक्त भी अनेक क्षेत्र और विषय अभी विद्यमान है, जिनके बारे में पत्रकारिता को अपना दृष्टिकोण प्रकट करना पड़ता है। जैसे - **हिन्दू कोड बिल, किशोर-किशोरियों का मुक्त मिलन, सैक्स शिक्षा, जात-पाँत तोड़ने के लिए अन्तर्जातीय विवाह, स्त्री-पुरुषों के समान अधिकार, विवाह विच्छेद के प्रश्न, शिक्षा के क्षेत्र में फैला भ्रष्टाचार, नवयुवकों और नवयुवतियों में बढ़ती नशीली वस्तुओं और मादक पदार्थो का उपयोग आदि अनेक ज्वलंत विषयों पर** आजकल पत्रकारिता में खुले आम वर्णन किया जाता है।

इसके अतिरिक्त राजनैतिक, भाषागत, साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिक और आदर्शगत समस्याओं एवं विवादों को बहस के क्षेत्र में जाना और उस पर अपना निर्णय देना पत्रकारिता का मुख्य कार्य है। समाज के विस्तीर्ण क्षेत्र में पत्रकारिता का संबंध हमेशा से रहा है। सामाजिक लोकचारों में मौलिक परिवर्तन हेतु पत्रकारिता निरन्तर संघर्ष करती रही है। इसके द्वारा समाज की बुराइयों - **शिशु-हत्या, बाल विवाह, विधवाओं की दयनीय दशा, दहेज प्रथा, वेश्यावृत्ति, अंधविश्वास और छूआछूत** आदि को समाप्त करने का बीड़ा उठाया।

4. समाज में पत्रकारिता का स्थान और महत्त्व

4.1 समाज में पत्रकारिता का स्थान

पत्रकारिता का समाज में क्या स्थान है और पत्रकारिता को जीवन में इतना महत्त्व क्यों दिया जाने लगा है? इस आधार पर मूल्यांकन करने के लिए निम्न मानदण्ड निर्धारित किये जा सकते हैं :-

- ❖ पत्रकारिता की सार्थकता।
- ❖ सामाजिक जनमत को प्रतिबिम्बित करना।
- ❖ समाज को उचित दिशा निर्देश देना।
- ❖ समाज को मनोरंजन सामग्री देना।

उपरोक्त मानदंण्डों पर खरी उतरने वाली पत्रकारिता निश्चित ही एक नवीन समाज की स्थापना करेगी। पत्रकारिता सच्ची घटनाओं या वास्तविकताओं पर इस तरह प्रकाश डालती है कि अंत में वे कल्याणकारी समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध होते हैं या **"बहुजन हिताय"** की भावना का साधन बन जाते हैं।

पत्रकारिता में जीवन के यथार्थ को अधिकाधिक रूप में समाज को प्रभावित करने की जो क्षमता होती है यदि उसमें पूर्ण सच्चाई हो तो उस क्षमता को और भी बल मिलता है और अनिवार्यतः समाज उससे प्रभावित होता है। परिणामतः व्यक्ति का निर्णय और उसका चिन्तन परिवर्तित हो जाता है।

पत्रकारिता के लेखों और टिप्पणियों में सच्चाई होने के कारण उसका प्रभाव समाज पर अवश्य पड़ता है। पत्रकारिता के विषय में कुछ भी हो पर उनमें तथ्य और सत्य की संगति होनी चाहिए। इस प्रकार पत्रकारिता का मुख्य यह है कि जन्मजात प्रवृत्ति से सीधा-संपर्क जुड़ता है।

पत्रकारिता समाज को प्रभावित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। पत्रकारिता के आदर्श का संवहन करने वाली पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका समाज के अग्रदूत रूप में प्रशंसनीय है।

4.2 समाज में पत्रकारिता का महत्त्व

पत्रकारिता समाज का दर्पण होती है। समाज में जो हुआ और हो रहा है या होगा - इस त्रिकाल से संबंधित समस्त हिसाब पत्रकारिता में चित्रित होता है। पत्रकारिता में समाज को प्रभावित करने की जो क्षमताएँ होती हैं उन समस्याओं का सशक्त स्वर अथवा प्रणेता भी पत्रकार ही होता है। पत्रकारिता भूत, वर्तमान और भविष्य का समन्वय करता है।

पत्रकारिता को दूसरे शब्दों में समाज की दिव्य-दृष्टि तथा समाज के सजग कान कहा जा सकता है। समाज को प्रभावित करने के लिए पत्रकार इतना श्रम करता है कि जिस श्रम के अवलम्बन पर पत्रकार प्रत्येक पत्रकारिता को ऐसा स्वच्छ दर्पण बनाता है, जिस दर्पण में सामाजिक छवि को निहारकर, समाज अवश्य ही प्रभावित होता है।

पत्रकार समाज के निर्माण के लिए जो त्याग करता है, उसका वह त्याग ही समाज को प्रभावित करता हैं और इस प्रभावित प्रक्रिया के पीछे पत्रकारिता ही उसका माध्यम होती है। आज समाज में पत्रकारिता के प्रति इतनी रुचि पैदा हो गई है कि सुबह होते ही पत्रों से ही दिनचर्या आरम्भ होती है।

पत्रकारिता तो जीवन में इस प्रकार घुल मिल गया है कि इसके बिना हम किसी भी दिन के शुभारम्भ की कल्पना भी नहीं कर सकते। शिक्षित-समाज पत्रकारिता का आदी हो गया है। इसलिए पत्रकारिता को समाज की अभिव्यक्ति का एक सशक्त साधन या माध्यम माना जाता है।

पत्रकारिता आज के जागरूक नागरिक का अभिन्न अंग हो गया है। पत्रकारिता आते ही शिक्षित नागरिक राजनीति, नौकरी, सिनेमा, खेलकूद, खाद्य वस्तुओं का भाव, विवाह हेतु वर कन्या की तलाश, आर्य समाज सनातन धर्म की चर्चा, पुस्तक समीक्षा, नए फैशन आदि विषयों पर अपनी दृष्टि डालता है।

ये सूचनाएँ समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य संसाधन बन गई है। आजकल पत्रकारिता शिक्षित वर्ग के लिए आकर्षण बिन्दु बन गया है।

"संवाद-पत्र आज की जनता का ऐसा साथी और मित्र हो गया है जिससे यह जीवन के प्रत्येक पहलू में सहायता की अपेक्षा करते हैं। जीवन का कोई अंग नहीं है, कोई समस्या नहीं है जिस विषय में जानने की बातें जनता उसके द्वारा उपस्थित किए जाने की आशा न करती हो।"

- कमलापति त्रिपाठी

{ हिन्दी पत्रकारिता का विकास; एन.सी.पंत; पृ॰ 267}

5. पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति

आज का युग न्यू इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का युग है फिर भी समाज का कोई भी पहलू ऐसा नहीं है जो पत्रकारिता से अछूता हो। यद्यपि रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट का प्रचलन बढ़ा है किन्तु भारत के बहुसंख्यक लोग आज भी पत्रकारिता से ही अपने आस-पास, देश-देशातंर के विषय में जानते हैं। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि आज भी पत्रकारिता भारतीय जनमानस का अभिन्न अंग है क्योंकि पत्रकारिता ही खबर की पूरी जानकारी देकर तृप्त करते हैं।

पत्रकारिता का मूल लक्ष्य लोगों को समाचार से अवगत कराना ही नहीं रहा है बल्कि रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना भी हो गया है। पत्रकारिता आज भी लोकहित की भावना को अपना मूल मंत्र मानकर जन सेवा कर रहे है। चाहे पत्रकारिता का आकार बड़ा हो या छोटा सभी जन सेवा कर रहे हैं। आम जनता में उनकी विश्वसनीयता इतनी बढ़ी है कि आज पत्रकारिता को समय का प्रामाणिक दस्तावेज माना जा रहा है।

पत्रकारिता सूचना प्रदान करने के दायित्व को भली-भांति निभा रहे हैं आज के न्यू इलैक्ट्रॉनिक युग में भी पत्रकारिता की आवश्यकता है क्योंकि भारत में यह जनसंपर्क का सबसे सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ है। आज पत्रकारिता ने अधिक लोकप्रियता अर्जित करने के लिए प्रतियोगिता को अपना लिया है जिस कारण समाचार-पत्र, पत्रिकाओं में हिंसा व कामुकता भरी, ग्लैमर

युक्त रचना व चित्रों का प्रकाशन बढ़ा है। पत्रकारिता के प्रकाशन में धन की आवश्यकता पड़ती है और विज्ञापन किसी भी पत्रकारिता के आय का अच्छा स्रोत है लेकिन अधिक से अधिक विज्ञापन छापने के चक्कर में पत्रकारिता अपने वास्तविक उद्देश्य को भूल रही है। यह तो माना जा सकता है कि विज्ञापन के बिना खर्चा पूरा नहीं होता किन्तु विज्ञापन प्रस्तुत करना ही तो पत्रकारिता का लक्ष्य नहीं है।

पत्रकारिता का वास्तविक ध्येय तो जन कल्याण है। जनता को सामायिक स्थिति को सुधारने में दिशा निर्देश करना है। पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति यह है कि आजादी के 60 वर्षों के उपरान्त भी स्वतंत्र व निर्भीक होकर अपना दायित्व कर्म पूरा नहीं कर पा रही है।

अतः वर्तमान में पत्रकारिता के समक्ष अनेक चुनौतियां है। जैसे-

- ❖ पत्रकारिता का उद्योग रूप में परिवर्तित होना।
- ❖ आदर्श के स्थान पर लाभ सर्वोपरि होना।
- ❖ संपादक की प्रखरता एवं निष्पक्ष छवि पर मालिकों व सत्ताधारियों का दबाव होना
- ❖ स्वार्थ लोलुपता के कारण खेमेबाजी, सौदेबाजी व भ्रष्टाचार का बढ़ना।
- ❖ विषय विशेषज्ञों के साथ-साथ जागरूकता एवं सचेत दृष्टि वाले पत्रकारों की कमी होना।
- ❖ सस्ती लोकप्रियता के लिए पीत पत्रकारिता का बढ़ना।
- ❖ विदेशी मीडिया के साथ प्रतियोगिता होना।

- ❖ विज्ञापनों का बेशुमार बढ़ता प्रचलन।
- ❖ राष्ट्रीय पत्रकारिता के स्थान पर विशेष आँचलिक पत्रकारिता को बढ़ावा मिलन।
- ❖ पाठकों दर्शकों को लुभाने सनसनीखेज खबरों का बढ़ता प्रचलन।
- ❖ वैज्ञानिकता की बजाय पढ़े-लिखे समाज का अंधविश्वासों की ओर बढ़ता रुझान।

उपरोक्त चुनौतियों के बावजूद कुछ 'पत्रकार' ऐसे हैं जो पत्रकारिता क्षेत्र में आए संकट को लेकर परेशान है वही दूसरी ओर कुछ पत्रकार पत्रकारिता की दशा और दिशा को लेकर आशन्वित भी है। पत्रकारिता को लेकर कितने ही विवाद और मतभेद क्यों न हों परन्तु यह निर्विवाद है। मानव सभ्यता के वर्तमान युग में पत्रकारिता अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। यह स्थितियों पर निर्भर करता है कि इसका उपयोग कौन और किस उद्देश्य की पूर्ति अथवा किसके हित में करता है।

6. पत्रकारिता और सामाजिक परिवर्तन

पत्रकारिता और सामाजिक दायित्व के विस्तृत पहल पर यह विचारणीय है कि पत्रकारिता द्वारा अब तक किन-किन क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन हो पाया है या किस - किस क्षेत्र में संभव है। पत्रकारिता द्वारा समाज के तमाम अंधविश्वासों पर आधारित मान्यताओं को समाप्त किया गया। पुरानी परम्पराओं,

रूढ़ियों और रीति-रिवाजों के कारण जो सामाजिक सोच बन जाती है उसे एकाएक बदल पाना सहज नहीं होता। किसी विचार के प्रति दृष्टिकोण, आस्था और सामाजिक मूल्यों को बदलने के लिए व्यक्ति, परिवार और समूहों को शिक्षित करने का एक अभियान छेड़ना पड़ता है। ऐसे कार्यों को प्रारम्भ करने के लिए बड़े सूझबूझ की आवश्यकता होती है।

सामाजिक परिवर्तन हेतु जब भी नया संदेश दिया जाए तो यह ध्यान में रखना चाहिए कि जिस वर्ग हेतु संदेश दिया जा रहा है। उस संदेश की मूल ध्वनि ऐसी निर्मित की जाए कि संबंधित वर्ग अथवा समूह को उसमें अपना हित दिखाई पड़े। ऐसी अवधारणा हेतु यह आवश्यक होगा कि उसकी सामाजिक, आर्थिक स्थितियों, उसकी दैनदिनी समस्याओं तथा उसके परिवेश की अच्छी जानकारी हासिल कर ली जाए।

इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन जहाँ एक दुष्कर प्रक्रिया है, वही पत्रकारिता द्वारा उसे आसान बनाया जा सकता है। इसके माध्यम से धीरे-धीरे लोगों के दृष्टिकोण में बदलाव आ सकता है। पत्रकारिता लोगों तक नये विचारों को पहुँचाने का कार्य करती है।

देश में रहित क्रांति को सफल बनाने में पत्रकारिता का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा। विज्ञान, कृषि, चिकित्सा, राजनीति और संस्कृति संबंधी मान्यताएँ उन क्षेत्रों में तेजी के साथ बदली है जहाँ उनका संबंध पत्रकारिता, रेडियो और दूरदर्शन से था।

सामाजिक परिवर्तन जरूरी तो है, लेकिन वह पीरवर्तन इस सीमा तक पहुँच जाए जहाँ देश और समाज का अपना वैशिष्ट्य, अपनी संस्कृति और अपनी अस्मिता ही समाज नष्ट कर दे। इसलिए पीरवर्तन में भी अपनेपन की पहचान आवश्यक है, जब उसमें विदेशों का बनावटीपन आ जायेगा।

परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है, इसलिए परिवर्तन होते रहने चाहिए। पत्रकारिता ही वह माध्यम है जिसके द्वारा समाज को उचित और सही दिशा का ज्ञान होता है। समाज में व्याप्त विभिन्न विषमताओं पर टीका-टिप्पणी करना ही पत्रकारिता का मूल कर्त्तव्य है।

आज की विषम परिस्थितियों में देश को अक्षम बनाए रखना, राष्ट्रीय भावना को मजबूती प्रदान करना, सामाजिक तथा आर्थिक बुराइयों का समाधान करना, धर्मनिरपेक्ष भावना को बलवान बनाना, समाज के विभिन्न वर्गों को एक दूसरे के समीप लाकर एकजुट करना, क्षेत्रीय भावना को समाप्त करना आदि पत्रकारिता के मूल उद्देश्य है।